

मायुः 96, 8. 113, 17. 23, 24. 24, 11. 66, 1. व्यंशेम देवहितं यदायुः 89, 8. ले
विश्वी सरस्वति श्रितायुषि देव्याम् 2, 41, 17. 27, 10. 38, 5. त्रीण्ययुषिषु तव
ज्ञातवैदः 3, 17, 3. 4, 4, 7. नहि स्वमायुश्चिकित्ते जनेषु 7, 23, 2. आयुर्वसान
उप वेतु शेषः 10, 16, 5. 27, 7. कुर्मस्तु आयुर्वारम् 31, 7. पुनर्मनः पुनरायुर्म
श्राग्न्युनः प्राणः पुनरात्मा म श्राग्नं VS. 4, 15, 28. 3, 27. आयुषे वर्चसे व-
लाय AV. 1, 33, 1. 6, 63, 1. वि यद्मेन समायुषा 3, 31, 1. उदकमायुरायुषे
क्रत्वे दत्ताय जीवसे 8, 2, 23. TS. 1, 1, 10, 2. मा पाश्चायुषः पुरा 5, 1, 3, 7. त-
स्मादायुः प्राणानामुत्तमम् 6, 3, 3, 1. यावद्देवास्येह मानुषमायुः ÇAT. Br. 1, 8,
3, 16. सर्वमायुरेति 2, 1, 3, 4. KHAND. UP. 2, 11, 2. BRH. ÅR. UP. 2, 1, 10. श्रा-
युरेवेन्द्रियं वीर्यमात्मन्धते ÇAT. Br. 3, 1, 1, 4. संस्पृष्टे ह्यायुश्च प्राणश्च 8; 7,
3, 11. प्राणो हि भूतानामायुः । तस्मात्सर्वायुषमुच्यते । सर्वमेव त आयुर्याति
TAITT. UP. 2, 3. परस्तादायुषः KHAND. UP. 2, 24, 6. आयुषे दीर्घायुत्वय PAR.
GRH. 2, 2. स्वस्यायुषः पारं पराच्यौ ÇAT. Br. 11, 1, 6, 6. AIR. Br. 8, 7.
शतौयुम् *hundertfaches Leben habend oder verleihend, hundert Jahre
lebend, — alt: नयं शतायुषम् RV. 6, 2, 5. पवित्रेण शतायुषा VS. 19, 37.
शतायुः पुरुषः शतेन्द्रियः TS. 3, 2, 3, 3. ÇAT. Br. 13, 1, 1, 4. शतायुषः पुत्रपौ-
त्रान्वृषीष्व KATHOP. 1, 23. M. 3, 186. (प्रजायतिः) सक्तुमायुषे ÇAT. Br. 11,
1, 6, 6. — आयुः — मृष्यते गर्भस्थस्यैव देहिनः PAÑKAT. II, 82. श्रोगाः स-
र्वसिद्धाद्याश्चतुर्वर्षशतायुषः । कृते त्रेतादिषु ह्येषामायुर्कृसति पादशम् (500,
200 und im Kalijuga 100 Jahre) || M. 1, 83. वर्षशतप्रमाणमायुः PAÑKAT.
187, 10. BHARTR. 3, 50. MRĀKH. 1, 18. चतुर्थमायुषो भागम् M. 4, 1, 3, 169.
6, 33. MBH. 1, 974. KATHAS. 14, 80, 81. दीर्घमायुः M. 4, 27, 76, 78, 94, 230.
R. 3, 73, 25, 26. स्वल्पं तयायुः PAÑKAT. Pr. 10. अल्पमायुः SĪV. 2, 25, M. 4, 157.
आयुर्वर्धते 7, 136. प्रवर्धते 4, 42. हीयते R. 2, 103, 19. प्रहीयते M. 4, 41. त-
रति 237. वापैः — आयुः — पीते रूधिरं तु पतत्रिभिः RAGH. 12, 48. श्रा-
युरादत्ते M. 4, 218. कृति 11, 40. श्रायतः 4, 189. श्रायुषि तपयन्ति R. 2, 103,
18. प्राप्य वर्षसक्तुमाणि बहून्त्यायुषि जीवतः । जीर्णस्यास्य शरीरस्य वि-
श्राप्तिमभिराचये || 2, 2, 6. आचाराहभते ह्यायुः M. 4, 156. यशसा योजया-
त्मानमायुषा चापि बान्धवान् R. 5, 2, 42. आयुःशेषता PAÑKAT. 9, 4, 32, 15.
आयुर्वृद्धि 187, 7. आयुषः तपे RAGH. 3, 69. आयुःतपे PAÑKAT. 78, 8. आयुःपरि-
तपे R. 3, 30, 9. आयुष्कारण SĪH. D. 13, 9. आयुष्करत्वं 11. आयुर्दाय Verz.
d. B. H. No. 857 (235, 8). 869. परिमितायुः R. 3, 33, 20. गता° 43, 22. PAÑKAT.
24, 18. HIR. I, 69. क्षीणा° SĪV. 2, 23. KATHAS. 14, 80. — 2) *lebendige Kraft
überhaupt: आयुर्दाम् RV. 3, 1, 5. पञ्चस्यायुषे (वा) ग्लूामि VS. 7, 23. —
3) Lebensfeier (vollständig श्रायुष्टोम), Name einer Begehung, welche
neben गो und ज्योतिस्म einen Bestandtheil der sechstägigen Abhiplava-
Feier bildet, als deren drittes und fünftes Tagewerk: ज्योतिर्गौरायुरिति
श्रुक्ता भवन्ति TS. 7, 4, 1, 4. ÇAT. Br. 12, 2, 3, 12. 13, 3, 4, 3. ज्योतिर्गौरायुरि-
ति त्रिकहुकाः KĪTJ. ÇR. 24, 1, 9. स्वर्गकामस्यायुरामयाविनो वा 23, 1, 16.
आयुर्गृह्यतिमरणे 24, 6, 19. ज्योतिर्गौरायुरिति स्तोमिर्भियन्ति AIR. Br. 4, 15.
ĀCV. ÇR. 9, 1. 10, 3. ज्योतिष्टोममायुषो R. 1, 13, 45. — 4) ein *घ्ननामन्* nach
NAIGH. 2, 7. — Vgl. 2. आयु und दीर्घायुम्.**

आयुस्तेजम् (श्रा + ते°) m. N. pr. eines Buddha LALIT. calc. 3, 20.

श्रायोग (von युञ्ज् mit श्रा) m. 1) *Anstellung an ein Geschäft, Beschäf-
tigung, = व्यापतिं* TRIK. 3, 3, 55. H. an. 3, 117. MED. g. 29. शरत्तैः क-
र्णिकारैश्च किंशुकैश्च सुयुष्पतिः । स देशो धमरायोगः प्रदीप्त इव लक्ष्यते ||
R. 5, 17, 15. — 2) *eine Darbringung von Wohlgerüchen und Kränzen*
H. an. MED. — 3) *Ufer, रोध* H. an. बोध (!) MED,

श्रायोगव m. 1) *dem Stamme der Ajogu angehörig: श्रायोगवो राजा*
heisst Marutta Avikshita ÇAT. Br. 13, 5, 4, 6. — 2) N. einer Misch-
kaste, angeblich *der durch Vermischung eines Çûdra mit einer Vaicjâ*
Entsprungenen H. 897. श्रायोगवमाह श्रानं चतुरन्तमभिमन्यस्वेति KĪTJ.
ÇR. 22, 1, 38. M. 10, 12. 16, 26. JĪGĪ. 1, 94. त्वष्टिस्त्वायोगवस्य M. 10, 48. f.
°वी 15, 35.

श्रायोद m. N. pr. eines Rshi: धाम्यो नामायोदः MBH. 1, 684, 689.

श्रायोधन (von युध् mit श्रा) n. 1) *Kampf, Schlacht* AK. 2, 8, 72. H.
796. an. 4, 158. MED. n. 163. कौरवायोधन MBH. 1, 584. RAGH. 6, 42. श्रा-
योधनाग्रसरता 3, 71. — 2) *Todtschlag (वध)* H. an. MED. — 3) *Kampf-
platz: प्रययौ — तूर्णमायोधनं प्रति* MBH. 3, 164, 45. DRAUP. 8, 30. R. 3, 32, 32.
6, 103, 18. 108, 4.

श्राय्, श्रायति *preisen: मामार्यति कृतेन कर्त्वेन च RV. 10, 148, 3. य श्रा-
रितः कर्मणि कर्मणि स्थिरः 1, 101, 4. इन्द्रो यः पूर्वैर्दरितः 8, 33, 5. Nir.*
3, 15. Wird NAIGH. 2, 14 unter den Verben, die *eine Bewegung* bezeich-
nen, aufgeführt. Im gaṇa काण्डादि zu P. 3, 1, 27 erscheint श्राय्, श्रायति
ohne Angabe der Bedeutung.

1. श्राय (von श्रय्) erhalten im abl. श्रायात् und श्राये (s. dd.): 1) *Ferne;*
vgl. 1. श्रया. — 2) *Nähe (?)*. — श्रयारम्, wobei wir auf श्राय verwiesen
haben, wird besser gerade von श्रय् mit श्रयि abgeleitet.

2. श्राय 1) *Erz, रीति*, m. n. H. 1047. m. H. an. 2, 395. n. Sch. zu AK.
2, 9, 97. ÇKDR. Vgl. श्रायकूट. — 2) n. *Eisenrost* RĪĀAN. im ÇKDR. — 3)
n. *Spitze, Ecke* Sch. zu ĀNANDAL. ÇKDR. — 4) m. N. eines Baumes, =
मधुराम्लफल, vulg. *रेपल* RATNAM. im ÇKDR. — 5) N. eines Sees KAUSH.
UP. in Ind. St. 1, 396. 398. fg. Vgl. 1. श्रय 4.

3. श्राय m. 1) = Ἄρης, *der Planet Mars* TRIK. 3, 3, 330. H. 116. an. 2,
395. MED. r. 7. HORAC. in Z. f. d. K. d. M. 4, 318. Ind. St. 2, 261. 283.
fg. — 2) *der Planet Saturn* TRIK. H. an. MED.

4. श्राय MBH. 1, 1498 wohl nur Druckfehler für श्राय *Speiche*.
श्रायकात् (von श्रायात्) praep. *fern*, mit dem abl.: श्रमदारकात् ÇAT. Br.
2, 3, 4, 10, 22. 3, 2, 1, 19.

श्रायकूट m. n. *Erz* AK. 2, 9, 97. H. 1047. — Vgl. 2. श्राय 1.
श्रायक्त (2. श्रा + रक्त) adj. *röthlich* SUÇA. 1, 113, 1. VIKR. 78.

श्रायन्त (von रन्त् mit श्रा) 1) adj. *bewacht, geschützt, = रतायुक्त* ÇABDAR.
zu bewachen, = रत्तणीय VIÇVA im ÇKDR. — 2) m. *Schutz, Wache, =*
रत्तक H. an. 3, 729. तेषामारत्तभूतं तु पूर्व देवं नियोजयेत् । रत्तासि हि वि-
लुम्पन्ति श्राद्धमारत्तवर्जितम् M. 2, 204. चरतुश्चारत्तगता तौ मेनो सर्वता दि-
शम् R. 5, 73, 2. रात्तसान् शतशस्तस्मिन्नारत्ते मध्यमे स्थितान् 10, 22. प्रून्य-
सेवर्णारत्ताम् (रात्तधानीम्) 2, 88, 19. Auch f. श्रायन्ता ÇĀNTIC. 3, 5: गृहे प-
र्यन्तस्थे द्विषाकपामोषं श्रुतवता स्ववेश्मान्यारत्ता (l. स्ववेश्मन्या°) क्रियते.
— 3) m. *die Gegend, wo die beiden Erhöhungen auf der Stirn des*
Elephanten zusammenstossen (कुम्भसंधि), TRIK. 2, 8, 37. *die Gegend un-
terhalb dieser beiden Erhöhungen (कृस्तिकुम्भाधः)* H. 1226. an. 3, 729.

श्रायन्तक (wie eben) m. *Wächter, Polizeibeamter* PAÑKAT. 129, 5.
श्रायन्तिक (von श्रायन्त) m. dass.: *श्रायन्तिकनायक* DAÇAK. in BENF. Chr.
193, 11.

श्रायद्य (von रन्त् mit श्रा) adj. *zu beschützen: राज्यं हि इरारद्यतमं*
मतम् R. 2, 82, 66.